

आदि का दूर होना 2. किसी प्रतिकूलावस्था या अनपेक्षित अवस्था से दुःखी मन का प्रसन्न हो जाना 3. किसी मनोरंजन प्रक्रिया से मन का खुश होना।

बहलाना स.क्रि. (तद्.) 1. किसी वस्तु आदि से किसी के ध्यान को दूसरी ओर प्रवृत्त करना या किसी व्यक्ति वस्तु आदि के आकर्षण से मन को भ्रमित करना या भुला देना 2. किसी कथा या रोचक प्रसंग से मनोरंजन करना 3. मन को अत्यधिक प्रसन्न करने वाली बातें करना।

बहलाव पुं. (तत्.) 1. मन को खुश करने की कोई क्रिया या भाव 2. समय का सदुपयोग करते हुए मनोरंजन।

बहस स्त्री. (अर.) 1. किसी बात या विवाद पर दो पक्षों में होने वाली तर्कयुक्त बातें, वाद-विवाद 2. न्यायालय में वादी-प्रतिवादी वकीलों के मध्य होने वाला तर्क-वितर्क 3. लोकसभा या विधान सभा आदि के सदस्यों के द्वारा सदन में प्रस्तुत किसी राष्ट्रीय समस्या या कानून आदि के विषय पर होने वाली चर्चा।

बहादुर वि. (तुर्की.) 1. जो शारीरिक दृष्टि से युद्ध, लड़ाई आदि करने में स्वस्थ, शक्तिशाली व पराक्रमी हो 2. वीरतापूर्ण कार्य करने वाला।

बहादुरी स्त्री. (तु.) वीरता, शूरता।

बहार स्त्री. (फा.) 1. वह मौसम जब प्रकृति के प्रत्येक अंग में रौनक दिखाई देती है, वसंत ऋतु 2. फूलों का मौसम 3. आनंद 4. शोभा 5. संगीत में वसंत राग की रागिनी मुहा. बहार आना- आनंद उमड़ना, शोभा या सौंदर्य का होना।

बहाल वि. (फा.) 1. किसी कानूनी प्रक्रिया द्वारा पहले की अवस्था को प्राप्त होना 2. न्यायालय द्वारा किसी निलंबित कर्मचारी की पहले की स्थिति यथावत् रखना 3. स्वस्थ या रोग मुक्त 4. प्रसन्नमन।

बहाली स्त्री. (फा.) 1. पूर्व प्रतिबंधित किसी योजना या कार्य के पुनः बहाल होने की स्थिति, पूर्व अवस्था की पुनःप्राप्ति 2. किसी निलंबन/

मुअत्तली के बाद कर्मचारी की पुनः पूर्वपद में नियुक्ति 3. रोग-मुक्त होने की स्थिति 4. मन की प्रसन्नता, चेहरे की रौनक।

बहाव पुं. (तद्.) 1. किसी नदी आदि के बहने की सुंदर स्थिति उदा. गंगा का तेज बहाव दर्शनीय होता है 2. जल की बहती धारा की गति या दिशा 3. प्रवाह की दिशा 4. लाक्ष. किसी प्रतिकूल प्रथा, विचारधारा आदि की वह तेज गति जिसे समय के हिसाब से रोक पाना संभव न हो।

बहिः अव्य. (तत्.) 1. बाहरी, बाह्य, बाहर 2. हिंदी में समस्तपद के रूप में ही प्रयोजनीय जैसे- बहिष्कृत, बहिर्गमन, बहिष्कार विलो. अंतः।

बहिःप्रज्ञा स्त्री. (तत्.) दर्श. बाह्य विषयों का ज्ञान कराने वाली बुद्धि।

बहिःस्रावी वि. (तत्.) जो बाहर स्रवित होता हो, बाहर स्रवित होने वाला, जिसका स्राव बाहर होता हो जैसे- स्वेद और लार ग्रंथियाँ बहिः स्रावी होती हैं।

बहिःस्पर्शी वि. (तत्.) 1. जो केवल बाह्य भाग को स्पर्श करता हो 2. ऊपरी विलो. अंतःस्पर्शी।

बहिक्रम पुं. (तद्.) व्यक्ति, प्राणी आदि की आयु, अवस्था, उम्र, वय, वयक्रम।

बहित्र पुं. (तत्.) वह उपकरण जिसमें बैठकर नदी आदि जलाशयों को पार किया जाता है, 1. नाव, नौका 2. जहाज (पानी वाला)।

बहिन/बहन स्त्री. (तत्.) दे. बहिन/बहिनी।

बहिन/बहिनी स्त्री. (तत्.) 1. एक ही माता-पिता की वह संतान जो एक लड़की तथा दूसरी लड़का हो तो वे दोनों आपस में बहिन भाई कहलाते हैं अर्थात् मादा संतान उस लड़के की बहिन होगी, जो रिश्तों में बहुत पवित्र माना जाता है रक्षाबंधन में बहिन ही भाई की कलाई में रक्षा सूत्र बाँधती है, अन्य बहिनें भी होती हैं जैसे- मौसेरी बहिन, ममेरी बहिन, फुफेरी बहिन आदि 2. सम्मानार्थ भी आयु में बड़ी किसी स्त्री को